

## මැවුම්කරු ජීවිතයේ ඉන්සානවයෙන් ඔවුන්ගේ පැවැත්ම සම්බන්ධයෙන් තෝරා ගැනීමේ අවකාශය මිනිසුන්ට පිරිනමා නැතහොත් ඇයි?

যদি অল্লাহ সৃষ্টি কো অস্তিত্ব মেন আনে যা ন আনে কা এখিত্যার দেতা, তো ইসকে লিএ জরুরী হোতা সৃষ্টি কা বজুদ পহলে সে রহা হো। ক্যোঁকি বিনা অস্তিত্ব কে মানব কী কোঁই রায় হী কৈসে হো সেকতী হৈ? যহাঁ সবাল অস্তিত্ব মেন হোনে যা ন হোনে কা হৈ। ইঁসান কা জীবন কে সাথ জুড়া হোনা এঁব উসে খোনে কা ডর উসকা ইস নেমত সে রাজী হোনে কা সবসে বড়া প্রমাণ হৈ।

জিন্দগী কী নেমত মানব কে লিএ এক পরীক্ষা হৈ, তাকি অচ্ছে ইনসান জো অপনে রব সে রাজী হোঁ এঁব বু্রে ইঁসান জো অপনে রব সে নারাজ হোঁ, দুনোঁ কে বীচ অঁतर কিয়া জা সকে। অত: মানব কী রচনা সে অল্লাহ কা উদেঁশ্য হৈ উসসে রাজী রহনে বালোঁ কো অলগ করনা, তাকি উনহেঁ আখিরত মেন অল্লাহ কা সম্মানীয় ঘর প্রাপ্ত হো।

যহ সবাল দরঅসল ইস বাত কা প্রমাণ হৈ কি জব সঁদেহ দিমাগোঁ মেন ঘর কর জাএ, তো সোচ ব বিচার খত্ম হো জাতা হৈ ঐর যহ কুরআন কে চমত্কার হোনে কা এক প্রমাণ হৈ।

खुद अल्लाह ताआला का फ़रमान है :

"मैं अपनी आयतों (निशानियों) से उन लोगों को फेर दूँगा, जो धरती में नाहक बड़े बनते हैं। और यदि वे प्रत्येक निशानी देख लें, तब भी उसपर ईमान नहीं लाते। और यदि वे भलाई का मार्ग देख लें, तो उसे मार्ग नहीं बनाते और यदि गुमराही का मार्ग देखें, तो उसे मार्ग बना लेते हैं। यह इस कारण कि उन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठलाया और वे उनसे ग़ाफ़िल थे।" [40] इसलिए यह मानना सही नहीं है कि इन्सान की रचना से अल्लाह का जो उददेश्य है, उसे जानना हमारा अधिकार है और हम उसका मुतालबा कर सकते हैं। अत: उसे हमसे छुपा लेना भी हम परकोई ज़ुल्म नहीं है।

[सूरा अल-आराफ़ : 146]

जब अल्लाह हमें हमेशा रहने वाला जीवन प्रदान करेगा और ऐसी नेमत एवं जन्नत में रखेगा जिसके बारे में न किसी कान ने सुना होगा, न जिसे किसी आँख ने देखा होगा और न किसी इन्सान के दिल में उसका ख्याल आया होगा, तो इसमें क्या ज़ुल्म है?

वह हमें आज़ाद इच्छा प्रदान करता है, तकि हम खुद निर्णय लें कि हमें उस नेमत को चुनना है या इस यातना को।

अल्लाह हमें उस चीज़ के बारे में बताता है, जो हमारी प्रतीक्षा कर रही है। हमारे सामने एक स्पष्ट रणनीति प्रस्तुत करता है, तकि हम उस नेमत तक पहुँच सकें और अज़ाब से बच सकें।

अल्लाह हमें विभिन्न तरीकों एवं पद्धतियों से उस जन्नत के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है और बार-बार हमें जहन्नम के मार्ग पर चलने से सावधान करता है।

अल्लाह हमें जन्नत वालों की कहानियाँ सुनाता है कि कैसे उन्होंने इसे प्राप्त किया और जहन्नम वालों के किस्से सुनाता है कि कैसे वे अज़ाब तक पहुँचे, ताकि हम इससे सबक हासिल करें।

इसी तरह वह जन्नत वालों तथा जहन्नम वालों के बीच होने वाली बातचीत को बयान करता है, ताकि हम सब कुछ अच्छी तरह समझ जाएँ।

अल्लाह हमारी नेकी को दस गुना बढ़ा देता है और गुनाह को एक ही गुनाह गिनता है और इसके बारे में भी बताता है, ताकि हम नेकी के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लें।

अल्लाह हमें बताता है कि यदि हम बरे कार्य के बाद अच्छा कार्य करें, तो हमारे गुनाह मिट जाते हैं। इस प्रकार हम दस नेकियाँ कमाते हैं, तो हमारे दस गुनाह मिटा दिए जाते हैं।

वह हमें बताता है कि तौबा पहले के गुनाहों को खत्म कर देती है। गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा हो जाता है, जैसे उसका कोई गुनाह ही न हो।

अल्लाह भलाई का रास्ता दिखाने वाले को भला करने वाले के ही तरह मानता है।

अल्लाह नेकी कमाने के रास्तों को आसान बनाता है। हम क्षमायाचना, तसबीह एवं अज़कार के द्वारा बड़े पुण्य कमा सकते हैं और बिना किसी परेशानी के अपने गुनाहों से छुटकारा पा सकते हैं।

वह कुरआन का हर अक्षर पढ़ने के बदले में हमारे लिए दस नेकियाँ लिखता है।

वह हमारे केवल भला काम करने की नीयत करने के बदले में नेकी लिख देता है, यद्यपि उसके बाद हम उसे कर न सकें। परन्तु बुरे काम की नीयत के बदले में हमें दंडित नहीं करता, जब तक कि बुरा काम हमसे हो न जाए।

अल्लाह हमसे वादा करता है कि यदि हम भलाई के काम में अग्रगामी रहें, तो वह हमें अधिक सुपथ दिखाएगा, हमें शक्ति प्रदान करेगा एवं हमारे लिए भलाई के रास्ते आसान कर देगा।

इसमें कौन-सा अत्याचार है ?

वास्तव में, अल्लाह हमारे साथ केवल न्याय का मामला नहीं करता, बल्कि वह हमारे साथ रहमत, उदारता एवं एहसान का मामला भी करता है।

ପ୍ରତିଭାବ ପିଠିପାଠ ଶୁଭକ୍ଷଣ ଓ ପିଠିପୁରା

୦୦୦୦୦୦: [000000://000.0000000.000/0000/00/00/0000/12/](http://000.0000000.000/0000/00/00/0000/12/)

୦୦୦୦୦୦ ୦୦୦୦୦୦: [000000://000.0000000.000/0000/00/00/0000/12/](http://000.0000000.000/0000/00/00/0000/12/)

2026 06:54:52